श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

ग्रीष्मकालीन परीक्षा - कार्यक्रम -2011

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
शनिवार 20 अगस्त 2011	1. बालबोध पाठमाला भाग1 (बालबोध प्रथम खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग1 (प्रवेशिका प्रथम खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष)
रविवार 21 अगस्त 2011	1. बालबोध पाठमाला भाग 2 (बालबोध द्वितीय खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2 (प्रवेशिका द्वितीय खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष) 10. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष)
सोमवार 22 अगस्त 2011	1. बालबोध पाठमाला भाग 3 (बालबोध तृतीय खण्ड) मौखिक 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 3 (प्रवेशिका तृतीय खण्ड) 3. रत्नकरण्ड श्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष)

नोट - (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय प्रात: 9 से शाम 5 बजे के बीच कभी भी सैट कर सकते हैं।
(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।
(3) किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।
(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक में लेवें।
शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें। **- ओमप्रकाश आचार्य, प्रबंधक-परीक्षा बोर्ड**

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 29 (वीर नि. संवत् - 2537) 336 अंक : 12

ज्ञानी जीव निवार...

ज्ञानी जीव निवार भरम तम, वस्तुस्वरूप विचारत ऐसे।।टेक।।
सुत तिय बंधु धनादि प्रगट पर, ये मुझसे हैं भिन्न प्रदेशे।
इनकी परिणति है इन आश्रित, जो जिन भाव परनवै वैसे।।
ज्ञानी जीव निवार...।। 1।।

देह अचेतन, चेतन मैं, इन परणति होय एकसी कैसे?
पूरन-गलन, स्वभाव धरै तन, मैं अज अचल अमल नभ जैसे।।
ज्ञानी जीव निवार...।। 2।।

पर-परिनमन न इष्ट अनिष्ट न, वृथा राग-रुख द्वंद भये से।
नसे ज्ञान निज फंसै बन्ध में, मुक्ति होय सम भाव लये से।।
ज्ञानी जीव निवार...।। 3।।

विषयचाह दवदाह नशै नहिं, बिन निज सुधा-सिन्धु में पैठे।
अब जिन बैन सुने श्रवनन तैं, मिटे विभाव करूँ विधि तैसे।।
ज्ञानी जीव निवार...।। 4।।

ऐसो अवसर कठिन पाय अब, निज हित हेत विलंब करे से।
पछतायौ बहु होय सयाने, चेतन 'दौल' छुटो भव भय से।।
ज्ञानी जीव निवार...।। 5।।

– कविवर पण्डित दौलतरामजी

छहढाला प्रवचन

मोक्षमार्ग की आराधना का उपदेश

आतम को हित है सुख, सो सुख आकुलता-बिन कहिए,
आकुलता शिवमाहिं न तातैं, शिवमग लाग्यो चहिए।
सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरन शिव, मग सो द्विविध विचारो,
जो सत्यारथ-रूप सो निश्चय, कारण सो व्यवहारो।।१।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

देखो, यह सत्यार्थ मोक्षमार्ग ! सच्चा मोक्षमार्ग राग से रहित है। आत्मा का ज्ञान व आनन्द राग से रहित है। ज्ञान और आनन्द आत्मा के मुख्य गुण हैं। **'चिदानंदाय नमः'** इत्यादि मन्त्र आत्मा के स्वभाव को ही सूचित करते हैं; उसमें श्रद्धा, वीर्य आदि अनन्तगुण भी समाविष्ट हो जाते हैं। जिस गुण की मुख्यता से देखा जाये, उसी गुणस्वरूप पूरा आत्मा दिखता है। आनन्द की मुख्यता से देखने पर सारा आत्मा आनन्दस्वरूप है, ज्ञान की मुख्यता से देखने पर आत्मा ज्ञानस्वरूप है; इसीतरह श्रद्धा आदि अनन्त गुणस्वरूप अखंड आत्मा है; उसके लक्ष्य से सम्यग्दर्शन-ज्ञान-आनन्द होता है।

आत्मा के लक्ष्य से राग नहीं होता, उसका तो अभाव हो जाता है। राग आत्मा का गुण नहीं है; अतः राग के आश्रय से आत्मा को गुण (सम्यग्दर्शनादि) प्रगट नहीं होते। सभी गुणों की निर्मलदशा आत्मा के ही आश्रय से होती है; जिसमें जो गुण नहीं होता, उसके आश्रय से उस गुण का कार्य भी नहीं होता। जिसमें जो गुण होता है, उसी के आश्रय से उनका कार्य होता है। जिसमें ज्ञान हो, उसके आश्रय से केवलज्ञान होता है, जिसमें आनन्द हो, उसके आश्रय से आनन्द होता है। जिसमें ज्ञान या आनन्द है ही नहीं, उसमें से वह कैसे मिलेगा ?

अतः हे जीव ! तुम पर का आश्रय छोड़कर स्वद्रव्य के सन्मुख होकर उसका ही आश्रय करो...यह कार्य शीघ्र करो, आत्महित के इस कार्य में विलंब न करो।

आत्मा की अवस्था में अनादिकाल से जो दुःख है, उसका अनुभव कैसे मिटे ?

और अनाकुलतारूप सच्चे आत्मसुख का अनुभव कैसे हो ? उसकी रीति वीतरागी सन्तों ने दिखायी है; उसको लक्ष्य में लेकर अपने हित का विचार करना चाहिए। बाहर की दूसरी बातों का विचार तो बहुत करते हो, किन्तु यह तो तुम्हारे हित की बात है, इसका भी थोड़ा विचार तो करो। संसार के विचार करके तुम दु:खी हो रहे हो, अब एक बार आत्मा के सुख का विचार करो।

दु:ख जितना आत्मा नहीं है; उसके पीछे जो आनन्द का समुद्र भरा है, उसको देखो तो तुममें आनन्द की तरंग उल्लसित होगी और दु:ख मिट जायेगा। आनन्द की विकृति ही दु:ख है, लकड़ी में दु:ख नहीं होता; क्योंकि उसमें आनन्दस्वभाव नहीं है। आनन्दस्वभाव जहाँ न हो, वहाँ उसकी विकृतिरूप दु:ख भी नहीं होता। दु:ख तो विकृत, क्षणिक, कृत्रिमभाव है; उसीसमय आनंद स्वभाव सहज अकृत्रिम शाश्वत अन्दर में मौजूद है। अपने आनन्दस्वभाव को भूलकर अज्ञान से जीव दु:खी हो रहा है; आनन्दस्वभाव का अनुभव करने से दु:ख मिट जाता है। दु:ख संयोग एवं स्वभाव में नहीं है, वह तो क्षणिक विकृति है; किसकी विकृति ? आत्मा के अंदर जो आनन्दस्वभाव भरा पड़ा है, उसकी पर्याय में विकृतदशा ही दु:ख है। आनंदस्वभाव के अनुभव से विकृतदशा छूटकर आनंददशा प्रगट होती है। अरे ! दु:ख का भी जीव को भान नहीं है। दु:ख का सच्चा स्वरूप पहचाने तो अपना सारा आनन्दस्वभाव सिद्ध हो जाता है; जब आनन्दस्वभाव को जाने, तभी दु:ख का भी स्वरूप पहचानने में आवे।

अब दु:ख की तरह कषाय की बात समझाते हैं। कषाय भी दु:ख ही है। अन्तर में आत्मा शांतरस से भरा हुआ अकषायस्वरूप है, उसके आश्रय से सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप अकषायभाव की उत्पत्ति होती है, वह मोक्षमार्ग है। उस अकषायभाव का आधार रागादि विकल्प नहीं है। राग-द्वेष स्वयं कषाय है, वह अकषायभाव का कारण नहीं होता और शांत अकषायस्वभाव की सन्मुखता से कषाय की उत्पत्ति नहीं होती। कषाय क्षणिक विकृतभाव है, अकषायस्वभाव त्रिकाल है; इन दोनों को पहचानने से अकषाय चैतन्यस्वभाव का अनुभव होता है और कषाय का अभाव होता है - यही मोक्षमार्ग है। क्षणिक कषाय को त्रिकाली स्वभाव का आधार नहीं है; त्रिकाली स्वभाव में तो कषाय है ही नहीं; ऐसे स्वभाव को लक्ष्य में लेने से कषायभाव दूर हो जाता है।

उसीप्रकार श्रद्धास्वभावी आत्मा की सन्मुखता सम्यग्दर्शन है। मिथ्यात्वरूप

विकृति तो एक क्षण की ही है, उसको स्वभाव का आधार नहीं है। त्रिकाल श्रद्धास्वभाव का स्वीकार करने पर मिथ्यात्व नहीं रहता। सम्यक्त्व प्रगट करने के लिए ऐसा आत्मस्वभाव ही आधाररूप है, रागादि विकल्पों के आधार से सम्यग्दर्शन नहीं होता।

उसीप्रकार सम्यक् पुरुषार्थरूप वीर्य आत्मा का स्वभाव है; उसके आश्रय से रत्नत्रय के पुरुषार्थरूप वीर्यबल प्रगट होता है; विकल्प में ऐसा सामर्थ्य नहीं है कि रत्नत्रय को प्रगट करे। बलवंत वीर्यवान् आत्मा है, जो कि स्वबल से रत्नत्रय प्रगट करता है। 'बल' नाम की एक औषधि होती है, वैसे आत्मा में वीर्यबलरूप ऐसा औषध है, जो सर्व कषाय रोगों को नष्ट करके अविकारी रत्नत्रय और केवलज्ञानादि चतुष्टय का अनन्त बल देता है। किसी भी राग में ऐसा बल नहीं है कि वह रत्नत्रय दे। अनन्तगुणरूप आत्मस्वभाव के आश्रय से मोक्षमार्ग एवं मोक्ष होता है। ऐसे सच्चे मोक्षमार्ग का विचार कर उसका आराधन करना चाहिए।

निश्चय से सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की एकतारूप एक ही मोक्षमार्ग है; दो मोक्षमार्ग नहीं हैं। 'एक होत तीन काल में, परमारथ का पंथ।' एक निश्चयमोक्षमार्ग और एक व्यवहारमोक्षमार्ग - ऐसे दो मोक्षमार्ग मानना मिथ्या है। यह बात पण्डित टोडरमलजी ने मोक्षमार्गप्रकाशक में बहुत अच्छे ढंग से समझायी है। निश्चय मोक्षमार्ग के अतिरिक्त अन्य किसी को मोक्षमार्ग कहना सच्चा मोक्षमार्ग नहीं है; परन्तु मात्र उपचार है - ऐसा जानना। शुद्ध आत्मतत्त्व को जानकर, उसकी श्रद्धाकर, उसके अनुभव से ही मोक्ष होता है, मोक्ष का अन्य कोई मार्ग नहीं है, नहीं है। **(न खलु न खलु यस्माद् अन्यथा साध्यसिद्धिः।)**

प्रवचनसार में कहते हैं कि जो अतीतकाल में क्रमशः हुए, उन सभी तीर्थंकर भगवन्तों ने एक ही प्रकार से कर्मांशों का क्षय किया; क्योंकि मोक्षमार्ग में द्वैत संभव ही नहीं है, एक ही मार्ग है। इसप्रकार शुद्धात्मा के अनुभव द्वारा समस्त कर्मों का क्षय करके सभी तीर्थंकर भगवन्तों ने तीनों काल के मुमुक्षुओं के लिए भी उसीप्रकार का उपदेश दिया और बाद में मोक्ष की प्राप्ति की; अतः निश्चित होता है कि निर्वाण का कोई अन्य मार्ग नहीं है। ऐसे एक ही प्रकार के सम्यक् मार्ग का निर्णय करके आचार्यदेव कहते हैं कि अहा, ऐसे स्वाश्रित मोक्षमार्ग का उपदेश देने वाले भगवन्तों को नमस्कार हो। हमने ऐसे मोक्षमार्ग का निर्णय किया है और उसकी साधना का कार्य चल रहा है। **(क्रमशः)**

नियमसार प्रवचन –

विभावस्वभावों का स्वरूप

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 41वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है –

णो खइयभावठाणा णो खयउवसमसहावठाणा वा।
ओदइयभावठाणा णो उवसमणे सहावठाणा वा।।41।।

इस जीव के क्षायिक क्षयोपशम और उपशम भाव के।
एवं उदयगत भाव के स्थान भी होते नहीं ।।41।।

जीव को क्षायिकभाव के स्थान नहीं हैं, क्षयोपशमस्वभाव के स्थान नहीं हैं, औदयिकभाव के स्थान नहीं हैं अथवा उपशमस्वभाव के स्थान नहीं हैं।

(गतांक से आगे...)

औदयिकभाव विकार है, विकार के लक्ष्य से धर्म नहीं होता।

औदयिकभाव के इक्कीस भेद इसप्रकार हैं :-

(१) नरकगति : जो जीव तीव्र पाप करता है, वह नरकगति में जाता है। वह धर्म का कारण नहीं है। कितने ही जीव कहते हैं कि खूब दु:ख वेदन करो तो सम्यक्त्व हो जायेगा; किन्तु नरक के जीव तो बहुत दु:ख सहते हैं, अत: उन्हें धर्म हो जाना चाहिए; परन्तु ऐसा होता नहीं है।

नरक में कोई जीव पूर्व के संस्कारवश पुरुषार्थ जागृत करे तो धर्म प्राप्त कर लेता है और वह धर्म ध्रुव चैतन्य के आश्रय से होता है, नरकगति धर्म का कारण नहीं है।

(२) तिर्यंचगति : तिर्यंचगति भी धर्म का कारण नहीं है।

(३) मनुष्यगति : मनुष्यगति धर्म का कारण नहीं; यदि यह धर्म का कारण हो तो सभी मनुष्यों को धर्म होना चाहिए; परन्तु जो मनुष्य ध्रुवस्वभाव का अवलम्बन लेते हैं, वही धर्म प्राप्त करते हैं। मनुष्यगति अथवा तीर्थंकर पुण्यप्रकृति धर्म का कारण नहीं है।

(४) देवगति : देवगति धर्म का कारण नहीं है। देवऋद्धि देखकर किसी को सम्यक्त्व होता है, वह निमित्त का कथन है। अपने शुद्धचैतन्यस्वभाव के अवलम्बन

से धर्म होता है - उसमें किसी जीव को देवऋद्धि का देखना निमित्त होता है। वास्तव में देवगति धर्म का कारण नहीं है।

(५) क्रोध (६) मान (७) माया (८) लोभ :- यह सब कषाय के परिणाम हैं और अधर्म के कारण हैं; धर्म के नहीं।

(९) स्त्रीलिंग : पुरुष के साथ रमने का भाव स्त्रीवेद का उदय है - यह धर्म का कारण नहीं है।

(१०) पुरुषलिंग : स्त्री के साथ रमने का भाव पुरुषवेद का उदय है - यह धर्म का कारण नहीं है।

(११) नपुंसकलिंग : स्त्री-पुरुष दोनों के साथ रमने का भाव नपुंसकवेद का उदय है - यह धर्म का कारण नहीं है।

इन विकारी भावों का अभाव करके शुद्धचैतन्य का अवलम्बन लेने से धर्म होता है।

(१२) मिथ्यादर्शन : आत्मस्वरूप की विपरीत मान्यता मिथ्यादर्शन है, वह सामान्यपने तो एक है; किन्तु उसके गर्भित भेद असंख्य हैं; उनसे धर्म नहीं है।

(१३) अज्ञान : अल्पज्ञान-हीनज्ञान होना अज्ञान है, उसके कारण धर्म नहीं होता।

(१४) असंयम : संयम न होना औदयिक भाव है, वह धर्म का कारण नहीं है।

(१५) असिद्धत्व : जीव की अशुद्धता, जिसके होने पर सिद्धदशा प्राप्त नहीं हो सकती। यह चौदहवें गुणस्थान तक उदय में है; अतः असिद्धत्व धर्म का कारण नहीं।

अब लेश्या के छह भेद कहते हैं। आत्मा के जिस परिणाम से कर्म का बन्धन हो उसे लेश्या कहते हैं। दृष्टान्तपूर्वक प्रत्येक लेश्या समझाते हैं। छह पुरुषों ने आम खाया; परन्तु सभी के परिणामों में अन्तर है -

(१६) शुक्ललेश्या : पवनप्रेरित स्वयं भूमि पर गिरे हुए आम को ही खाने का भाव होना शुक्ललेश्या का दृष्टान्त है।

(१७) पद्मलेश्या : वृक्ष पर चढ़कर पके आम तोड़कर खाने का भाव पद्मलेश्या का दृष्टान्त है।

(१८) पीतलेश्या : वृक्ष पर चढ़कर आम के गुच्छे तोड़कर आम खाने का भाव होना पीतलेश्या का दृष्टान्त है।

(१९) कापोतलेश्या : वृक्ष पर चढ़कर छोटी डाल तोड़कर आम खाने का

भाव होना कापोतलेश्या का दृष्टान्त है।

(२०) नीललेश्या : वृक्ष की मोटी डाल तोड़कर आम खाने का भाव होना नील लेश्या का दृष्टान्त है।

(२१) कृष्णलेश्या : सम्पूर्ण वृक्ष काटकर आम खाने का भाव होना कृष्णलेश्या का दृष्टान्त है।

इनमें शुक्ल, पद्म, पीत - ये तीन शुभ हैं और कापोत, नील, कृष्ण - ये तीन अशुभ हैं। छहों लेश्या अधर्म का कारण है; शुक्ललेश्या भी धर्म का कारण नहीं है।

इसप्रकार औदयिक भाव के इक्कीस भेद बतलाये, इनमें से किसी भी भाव से धर्म नहीं होता। उन पर से लक्ष्य छोड़कर शुद्धचैतन्यस्वभाव का लक्ष्य करने पर ही धर्म होता है, वह शुद्धचैतन्यस्वभाव ही धर्म का कारण है।

पारिणामिकभाव के तीन भेद इसप्रकार हैं :-

(१) जीवत्व पारिणामिक : त्रिकाल जीवपना रहना जीवत्व पारिणामिकभाव है। जीव कभी भी जड़ नहीं होता - कीड़ा हो, मकोड़ा हो; परन्तु जीवत्व सदा कायम रहे। भव्य तथा अभव्य दोनों में यह समान होता है।

(२) अभव्यत्व पारिणामिक : यह भाव अभव्य जीवों के होता है। जिस प्रकार छर्रा (कठोर) मूंग पानी में उबालने पर गलती नहीं है, पकती नहीं है; उसी प्रकार अभव्य जीव को कभी भी मोक्ष नहीं होता । पाप किया है, इसलिए अभव्य हुआ है - ऐसा नहीं है; परन्तु उसमें तो तीनोंकाल मोक्ष जाने की अयोग्यता है। अभव्यों की अपेक्षा भव्यजीव अनन्तगुणे अधिक हैं।

(३) भव्यत्वपारिणामिक : यह भाव भव्य जीवों के होता है। जो मुक्ति प्राप्त करने के योग्य होता है, उसे भव्य कहते हैं। पुण्य किया, इसलिये भव्य है - ऐसा नहीं है, उसका तो भव्यपने का स्वभाव ही है।

इसप्रकार पाँच भावों का कथन समाप्त हुआ।

पाँच भावों में क्षायिकभाव कार्यसमयसाररूप है। आत्मा शुद्ध चिदानन्दस्वरूप है; उसमें श्रद्धा, ज्ञान और रमणता करके अन्तरशक्ति व्यक्त हुई, उस पूर्ण निर्मल व्यक्तदशा को कार्यसमयसार कहते हैं।

कर्मों के उदय से होनेवाला औदयिकभाव, कर्मों के उपशम से होनेवाला औपशमिक भाव और कर्मों के क्षयोपशम से होनेवाला क्षायोपशमिकभाव संसारी जीवों के ही होता है, सिद्ध जीवों के ये भाव नहीं होते। **(क्रमशः)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : एक ओर तो कहते हैं कि ज्ञानी का भोग निर्जरा का कारण है और दूसरी ओर कहते हैं कि शास्त्र की ओर जानेवाला लक्ष्य शुभराग होने से बन्ध का कारण है।

यहाँ प्रश्न है कि जब शास्त्रलक्ष्यी शुभराग भी बन्ध का कारण है तो फिर भोग भोगनेरूप अशुभराग निर्जरा का कारण कैसे हो सकता है ?

उत्तर : ज्ञानी के ज्ञान का अचिन्त्य माहात्म्य बताने के लिए भोग को निर्जरा का कारण कहा है; भोग की पुष्टि के लिये नहीं। समयसार में एक जगह कहते हैं कि हे ज्ञानी ! तू परद्रव्य के भोग को भोग - ऐसा कहकर आचार्यदेव कहीं भोग भोगने की प्रेरणा नहीं दे रहे हैं; अपितु उनके कहने का आशय यह है कि इस जीव को परद्रव्य के कारण किंचित् भी बन्ध नहीं होता। शास्त्र में जहाँ जिस आशय से, अभिप्राय से कथन किया गया हो; वहाँ उसी अभिप्राय से समझना चाहिये।

प्रश्न : संयमलब्धिस्थान को पुद्गल का परिणाम कहा है तो वहाँ सरागसंयम लेना या वीतरागसंयम ?

उत्तर : संयम सराग होता नहीं। वीतरागी भाव संयम है, शुद्धपर्याय है; परन्तु दो भेद पड़ते हैं और उनके ऊपर लक्ष्य देने से राग होता है, इसलिये उसे पुद्गल का परिणाम कहा है। जीव तो एकरूप अखण्ड है; उसमें भेद करने पर जितने परिणाम जीवस्थान, मार्गणास्थान, गुणस्थान के हों; वे सब पुद्गल की रचना है, जीव की नहीं - ऐसा निस्संदेह जानो।

प्रश्न : उपयोग को कितना अन्दर ले जाने से आत्मा का दर्शन होता है - आत्मा प्राप्त होता है ?

उत्तर : जो उपयोग बाहर में जाता है, उसे अन्दर स्व में ले जाना है। उपयोग का स्व में ले जाना ही अन्दर ले जाना कहा जाता है। उपयोग के स्व में ढलते ही आत्मा का दर्शन होता है।

प्रश्न : क्या आत्मा और राग का भेदज्ञान करना अशक्य है ?

उत्तर : नहीं, नहीं। यद्यपि आत्मा और राग की संधि अतिसूक्ष्म है, बहुदुर्लभ है; तथापि अशक्य तो नहीं। ज्ञानोपयोग को अतिसूक्ष्म करने पर वह आत्मा लक्ष्य में आ सकता है। पंचमहाव्रत के परिणाम अथवा शुक्ललेश्यारूप कषाय की मन्दता के परिणाम अतिसूक्ष्म अथवा दुर्लभ नहीं है; किन्तु आत्मा अतिसूक्ष्म है; अत: उपयोग को अतिसूक्ष्म करने से आत्मा अनुभव में आता है।

प्रश्न : स्वद्रव्य को परद्रव्य से भिन्न देखो - ऐसा श्रीमद् राजचन्द्रजी ने कहा है। कृपया इसका कुछ विस्तृत विवेचन कीजिए ?

उत्तर : देह-मन-वाणी तथा स्त्री-पुत्रादि तो परद्रव्य होने से भिन्न हैं ही; किन्तु देव-शास्त्र-गुरु भी परद्रव्य होने से आत्मा से भिन्न ही हैं - ऐसा देखो। एक द्रव्य अन्यद्रव्य का कुछ भी कर सकता नहीं, क्योंकि प्रत्येक द्रव्य का स्वभाव चमत्कारिक है। एक रजकण दूसरे रजकण का कार्य किंचित्मात्र भी नहीं कर सकता। लकड़ी हाथ से ऊँची उठी नहीं अथवा कलम से अक्षर लिखे नहीं गये, कारण कि एक द्रव्य अन्य द्रव्य से भिन्न है। स्वद्रव्य और पर-द्रव्य को भिन्न-भिन्न देखने में द्रव्य की प्रभुता है।

प्रश्न : परमात्मा होने के लिए ज्ञानियों ने शास्त्रों में क्या कहा है ?

उत्तर : सर्व शास्त्रों के सार में ज्ञानियों ने पर और विकार से भिन्न इस ज्ञानानन्द चैतन्यरत्न को ही पहिचानने के लिये कहा है। पूर्वप्रारब्धानुसार जो संयोग-वियोग होते हैं, वे चैतन्य नहीं और वह प्रारब्ध भी आत्मा नहीं तथा जिस भाव से प्रारब्ध बँधा, वह भाव भी आत्मा नहीं है। शरीरादि संयोग से भिन्न - ऐसे चैतन्यस्वरूप भगवान आत्मा का भान करे तो परमात्मा बनता है और फिर कभी वह संसार में अवतरित नहीं होता।

प्रश्न : आत्मा मात्र जाननेवाला ही है - ऐसा आपने कहा। अब इसमें करने के लिये रह ही क्या गया है ?

उत्तर : अरे भाई ! इसमें तो अपार करने के लिए है। देहादि परद्रव्य की तरफ जो लक्ष्य जाता है, उस लक्ष्य को जाननेवाला - ऐसा जो अपना आत्मा, उस आत्मा को जानने में उपयोग को लगाना है। आत्मा को जानने में तो अनन्त पुरुषार्थ आता है।

प्रश्न : परपदार्थ बन्ध के कारण नहीं हैं तो उनके संग का निषेध क्यों किया जाता है ?

उत्तर : यद्यपि बन्ध के कारण तो जीव के परिणाम ही हैं, बाह्य वस्तु नहीं; तथापि बाह्य वस्तु के आश्रय से होनेवाले अध्यवसान को छुड़ाने के लिये उसके आश्रयभूत बाह्य वस्तु का निषेध किया जाता है। बाह्य वस्तु के आश्रय बिना अध्यवसान नहीं होते; अत: अध्यवसान का निषेध करने के लिये बाह्य वस्तु के संग का निषेध करते हैं, उसका लक्ष्य छुड़ाते हैं।

दशलक्षण पर्व हेतु आमंत्रण भेजें !

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु हमारे पास आमंत्रण-पत्र आना प्रारंभ हो गये हैं। जो भी अपने जिनमंदिर में विद्वान की व्यवस्था चाहते हैं, वे अपना आमंत्रण-पत्र भेजें; ताकि समय रहते उचित व्यवस्था की जा सके। प्रवचनार्थ जाने वाले सभी विद्वानों को अपनी स्वीकृति भेजने हेतु पत्र भी भेज दिये गये हैं, एतदर्थ विद्वानों से भी निवेदन है कि वे अपनी स्वीकृति शीघ्र भेजें।

- मंत्री, टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

समाचार दर्शन -

45वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

● देश के विभिन्न प्रान्तों से पधारे हुये 1315 आत्मार्थी ज्ञानयज्ञ में सम्मिलित ● प्रात: 5 से रात्रि 10 बजे तक विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से 16 घण्टे अविरल ज्ञानगंगा प्रवाहित ● शिविर में लगभग 47 विद्वानों का समाज को लाभ मिला ● बालबोध प्रशिक्षण में 221 एवं प्रवेशिका प्रशिक्षण में 77 विद्यार्थी सम्मिलित हुये ● शिविर में लगभग 52 हजार रुपयों का सत्साहित्य एवं लगभग 21722 घण्टों के सी.डी. व डी.वी.डी. प्रवचन घर-घर पहुँचे।

जयपुर (राज.) : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित एवं श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट कोटा द्वारा आयोजित 45 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर दिनाँक 15 मई से 1 जून, 2011 तक अनेक उपलब्धियों के साथ सानंद सम्पन्न हुआ।

शिविर के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता श्रीमती सुनीता ध.प. श्री प्रेमचंदजी बजाज एवं सुपुत्र तन्मय-ध्याता बजाज परिवार कोटा, **शिविर एवं विधान के आमंत्रणकर्त्ता** श्री कैलाशचंदजी प्रकाशचंदजी सेठी परिवार लालकोठी जयपुर, **शिविर के आमंत्रणकर्त्ता** श्रीमती मीना अनूप शाह मुम्बई, श्री अर्पित जैन सुपुत्र श्रीमती किरण एवं अशोक कुमार जैन मुम्बई, श्रीमती स्वाति ध.प. वैभव जैन माताजी श्रीमती सुशीला ध.प. श्री अजितप्रसादजी जैन राजपुर रोड़ दिल्ली थे।

प्रात:कालीन प्रवचन – प्रतिदिन आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी.प्रवचन के बाद तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के समयसार ग्रंथाधिराज के पुण्यपाप अधिकार पर मार्मिक प्रवचन हुये।

रात्रिकालीन प्रवचन – प्रतिदिन ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के **लघु जैन सिद्धांत प्रवेशिका** के आधार से हुए द्वितीय प्रवचन के पूर्व प्रतिदिन क्रमश: डॉ. नरेन्द्रजी शास्त्री मन्दसौर, डॉ. श्रीयांसजी शास्त्री जयपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित संजयजी सेठी जयपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित प्रकाशजी छाबड़ा इन्दौर, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित जयकुमारजी जैन कोटा, पण्डित जिनचंदजी अलमान हेरले कोल्हापुर, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. दीपकजी शास्त्री जयपुर, पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा एवं पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के विभिन्न विषयों पर मार्मिक प्रवचन हुये।

दोपहर की व्याख्यानमाला में – पण्डित अनंतजी विश्वंभर सेलू, पण्डित नरेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित विनीतजी शास्त्री ग्वालियर, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई, पण्डित आदित्यजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित राकेशजी शास्त्री लिधौरा, पण्डित मनीषजी कहान खड़ैरी, पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर काटोल, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी शास्त्री विराटनगर, डॉ. अरविन्दकुमारजी शास्त्री सुजानगढ, पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई, पण्डित रितेशजी शास्त्री डडूका, पण्डित विजयजी बोरालकर, पण्डित परेशजी शास्त्री, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री बांसवाडा के विविध विषयों पर व्याख्यान हुए।

प्रशिक्षण कक्षायें – बालबोध प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक एवं शिक्षण पद्धति की कक्षा पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर एवं पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा ने ली। प्रवेशिका प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक एवं शिक्षण पद्धति की कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं पण्डित कोमलचन्दजी टडा द्वारा ली गई।

प्रशिक्षण अभ्यास कक्षाओं में डॉ.नरेन्द्रजी जैन मन्दसौर, पण्डित नरेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित खेमचन्दजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित रितेशजी शास्त्री डडूका, पण्डित राकेशजी शास्त्री लिधौरा, पण्डित अनंतजी विश्वंभर सेलू, पण्डित विनीतजी शास्त्री ग्वालियर, पण्डित महावीरजी मांगुलकर कारंजा, पण्डित विजयजी बोरालकर, विदुषी कमलाजी भारिल्ल जयपुर, विदुषी शुद्धात्मप्रभाजी टडैया मुम्बई, विदुषी रंजनाजी बंसल अमलाई, डॉ. ममता जैन बांसवाडा, श्रीमती शुभांगी मांगुलकर एवं कु.परिणति पाटील का सहयोग प्राप्त हुआ।

प्रौढ़ कक्षायें – नयचक्र की कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, **गुणस्थान विवेचन** की कक्षा ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, **परोक्ष प्रमाण** की कक्षा ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, **छहढाला** की कक्षा पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं **गोम्मटसार जीवकाण्ड** की कक्षा पण्डित प्रकाशचंदजी छाबड़ा इन्दौर ने ली।

प्रात: 5 बजे की **प्रौढ़ कक्षा** में पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर एवं पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा का लाभ मिला।

बालवर्ग हेतु प्रतिदिन तीन समय कक्षाओं का आयोजन किया गया। इन कक्षाओं का संचालन डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टडैया मुम्बई के निर्देशन में प्रशिक्षणार्थी अध्यापकों द्वारा किया गया, जिसमें 108 बच्चे सम्मिलित हुये। प्रत्येक बालक ने बालबोध पाठमाला के तीनों भागों की परीक्षा दी एवं पण्डित आराध्य टडैया के निर्देशन में रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन एवं दीक्षान्त समारोह – मंगलवार, दिनांक 31 मई को आयोजित इस समारोह में अनेक प्रशिक्षणार्थियों ने अपने विचार व्यक्त किये।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के दीक्षांत भाषण के पूर्व पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत की साथ ही पण्डित कमलचन्दजी पिडावा ने प्रशिक्षण कक्षाओं की रिपोर्ट एवं परीक्षा-परिणाम प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर बालबोध एवं प्रवेशिका प्रशिक्षण में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त छात्रों के अतिरिक्त उत्तीर्ण समस्त प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण-पत्र एवं ग्रन्थ भेंट कर पुरस्कृत किया गया। ●

दिनांक 31 जुलाई से 9 अगस्त, 2011 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन निश्चित है, किसी भी दुष्प्रचार से भ्रमित न हों। यदि आपके नगर में शिविर नहीं लगने संबंधी कोई अफवाह फैला रहा हो तो 09785643202 मो.नं. पर संपर्क करें।

श्री टोडरमल स्नातक परिषद् का –

चतुर्थ राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ दिनाँक २९ मई को श्री टोडरमल स्नातक परिषद् का चतुर्थ अधिवेशन संपन्न हुआ।

अधिवेशन की अध्यक्षता परिषद् के अध्यक्ष पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री महेन्द्रकुमारजी चौधरी भोपाल तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सतीशजी मेहता अहमदाबाद, श्री अशोककुमारजी जैन भोपाल एवं श्री महेन्द्रजी चौधरी भोपाल उपस्थित थे। विद्वत्वर्ग में तत्त्ववेत्ता डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र.यशपालजी जैन, डॉ. श्रीयांसजी सिंघई एवं पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित रतनचन्दजी चौधरी कोटा, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा आदि मंचासीन थे।

परिषद् के कार्यकारी अध्यक्ष पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने स्नातक परिषद् की स्थापना और कार्य की जानकारी दी।

इस अवसर पर उपस्थित सभी सदस्यों ने स्वयं का एवं स्वयं के द्वारा किये जा रहे तत्त्वप्रचार के कार्यों का परिचय देते हुये परिषद की गतिविधियों को आगे बढाने के संबंध में अपने विचार व्यक्त किये। इसके पश्चात् मुख्य अतिथि एवं अध्यक्ष महोदय ने भी अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

नवगठित महाराष्ट्र प्रान्तीय कार्यकारिणी के उपस्थित सदस्यों को डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा शपथ दिलायी गई। कार्यकारिणी के अन्तर्गत **अध्यक्ष** पण्डित महावीरजी पाटील सांगली; **मंत्री** पण्डित आलोककुमारजी शास्त्री कारंजा; **सहमंत्री** पण्डित हेमन्तजी बेलोकर ढासाला; **उपाध्यक्ष** पण्डित जिनचन्द्रजी आलमान हेरले, पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर काटोल व पण्डित अमोलजी सिंघई हिंगोली; **संगठन मंत्री** पण्डित भरतजी अलगोंडर व पण्डित अनन्तजी

(शेष पृष्ठ 30 पर...)

पाषाण शुद्धि संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन स्थित त्रिमूर्ति जिनालय में विराजमान होने वाले जिनबिम्बों के शिलाखण्ड की शास्त्रोक्त विधि से शुद्धि का भव्य कार्यक्रम दिनांक 21 मई को आयोजित किया गया।

इस अवसर पर प्रात: पूजन के पश्चात् गुरुदेवश्री के मांगलिक प्रवचन का लाभ मिला। इसके पश्चात् श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने पंचकल्याणक की रूपरेखा का विस्तृत परिचय सभा को दिया।

इसी प्रसंग पर शिल्पकारों का सम्मान करते हुये उन्हें प्रतिमा निर्माण में शुद्धता रखने हेतु आवश्यक प्रतिज्ञायें दिलायी गयी। तत्पश्चात् पाषाणशुद्धि का कार्य संपन्न हुआ। इसके अन्तर्गत सभी विद्वानों के अतिरिक्त श्री अनंतराय ए. सेठ मुम्बई, श्रीमती कनकबेन अनंतभाई सेठ, श्री अजितप्रसादजी दिल्ली, श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी किशनगढ, श्री राजकुमारजी टोंग्या जयपुर, श्री आदीशजी जैन दिल्ली, श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई, युवा फैडरेशन जयपुर महानगर व वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल के सभी सदस्यों व ब्र. बहनों द्वारा पाषाण शुद्धि की गई।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का –

33वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न

जयपुर (राज.): यहाँ शिक्षण प्रशिक्षण शिविर के दौरान दिनांक 22 मई, 2011 को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 33वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन अनेक उपलब्धियों के साथ सम्पन्न हुआ।

सभा की अध्यक्षता फैडरेशन के उपाध्यक्ष श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, मुम्बई ने की। मुख्यअतिथि के रूप में श्री अजितप्रसादजी जैन, दिल्ली एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री कान्तिलालजी बड़जात्या व श्री राजकुमारजी अजमेरा रतलाम मंचासीन थे। विद्वानों एवं फैडरेशन के पदाधिकारियों के रूप में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा इन्दौर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ, श्री पुष्पेन्द्रजी भिण्ड, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित प्रकाशजी छाबड़ा, पण्डित कोमलचंदजी टडा, पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री, श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर एवं डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया आदि महानुभाव मंचासीन थे।

फैडरेशन के महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई ने संस्था की उपलब्धि एवं उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुये बालकों एवं नवयुवकों को फैडरेशन में शामिल होने का आव्हान किया।

राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष श्री जिनेन्द्र शास्त्री उदयपुर ने अपने प्रदेश की गतिविधियों की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की।

इस अवसर पर अहिंसा एवं शाकाहार के प्रचार हेतु राजस्थान प्रदेश में एक अहिंसा शाकाहार रथ का उद्घाटन माननीय गुलाबचंदजी कटारिया (पूर्व गृहमंत्री-राज.सरकार)के करकमलों से हुआ।

महिला प्रकोष्ठ से विदुषी शुद्धात्मप्रभा टडैया ने बताया कि बालकों में अच्छे संस्कार कैसे डाले जायें एवं महिलाएं इसमें अपनी भूमिका किसप्रकार निभा सकती हैं। पण्डित प्रकाशजी छाबड़ा ने आधुनिक संचार साधनों का उपयोग तत्त्वप्रचार में करने पर जोर दिया।

इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के मार्मिक सुझावों का लाभ मिला। संगठन मंत्री श्री पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने फरवरी 2012 में होने वाले आदर्श पंचकल्याणक की विशेषताएं बतायी।

सभा का संचालन श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने एवं आभार प्रदर्शन पण्डित संजयजी सेठी जयपुर ने किया।

(पृष्ठ 29 का शेष ...)

विश्वम्भर सेलू; **कार्यकारिणी सदस्य** पण्डित गुलाबचंदजी बोरालकर एलोरा, पण्डित विक्रान्तजी शाह सोलापुर, पण्डित शीतलजी हेरवाडे, पण्डित जितेन्द्र राठी नागपुर, पण्डित किशोरजी धोंगडे व पण्डित संतोषजी सावजी चुने गये।

मंगलाचरण पण्डित आदित्यजी शास्त्री खुरई ने एवं संचालन पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने किया।

गुरुदेवश्री की जयन्ती संपन्न

1. जयपुर (राज.) : यहाँ पण्डित टोडरमल स्मारक भवन में दिनाँक 7 मई को गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की जन्म जयन्ती अत्यंत उत्साह और उमंग के साथ मनाई गई।

सभा की अध्यक्षता श्री शांतिलालजी जैन अलवरवालों ने की। मुख्यअतिथि के रूप में श्री ताराचंदजी सोगानी जयपुर एवं प्रमुख वक्ता के रूप में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल मंचासीन थे।

इस अवसर पर प्रमुख वक्ता पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने गुरुदेवश्री की महिमा करते हुए कहा कि उनके द्वारा होने वाला अध्यात्म का प्रचार-प्रसार तो श्रेष्ठ था ही, साथ ही उनका व्यावहारिक पक्ष भी बहुत मजबूत था। प्रतिदिन सायं 4 से 5 बजे तक 1 घंटा जिनेन्द्रदेव की भक्ति करते थे। उनका सदाचार भी बहुत मजबूत था। गुरुदेवश्री का तत्त्वज्ञान आज बहुत बढ गया है, इसका प्रतिफल है कि आज अनेक संस्थाएं इस कार्य में संलग्न हैं।

मुख्य अतिथि श्री ताराचंदजी सोगानी ने अपने वक्तव्य में गुरुदेवश्री के अनंत उपकार को स्मरण करते हुए कहा कि यदि गुरुदेवश्री को तत्त्वज्ञान न मिलता और वे दिगम्बर धर्म को न अपनाते तो आज तत्त्वप्रचार का ऐसा मजबूत कार्य कैसे हो पाता, जो आज दिखाई दे रहा है।

अध्यक्षीय भाषण देते हुए श्री शांतिलालजी ने कहा कि हमारे जीवन के बदलने का आधार गुरुदेवश्री द्वारा प्राप्त तत्त्वज्ञान ही है।

सभा में फैडरेशन के राष्ट्रीय मंत्री श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्रीमती कमला भारिल्ल एवं महाविद्यालय के छात्र प्रतिनिधि के रूप में सर्वज्ञ भारिल्ल ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। श्रीमती सुशीला जैन ने काव्यपाठ किया।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित सोनूजी शास्त्री ने किया।

2. उदयपुर (राज.) : यहाँ चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन चैत्यालय, मुमुक्षु मण्डल मुखर्जी चौक के स्वाध्याय भवन में दिनाँक 6 मई को गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की जयन्ती बहुत धूमधाम से मनाई गई।

इस अवसर पर महिला फैडरेशन मुमुक्षु मण्डल द्वारा प्रात: प्रभात फेरी निकाली गई।

सायंकाल 'सत्पुरुष कानजीस्वामी के जीवन दर्शन एवं सिद्धांत' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें वक्ताओं के रूप में श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री (प्रदेश अध्यक्ष-अ.भा.जैन युवा फैडरेशन), पण्डित खेमचंदजी शास्त्री (उदयपुर जिला प्रभारी-युवा फैडरेशन), श्री हीरालालजी अखावत (मन्दिर अध्यक्ष), श्री रंगलालजी बोहरा ने कानजीस्वामी के जीवन दर्शन पर प्रकाश डालते हुए महिलाओं एवं युवाओं को स्वामीजी के सिद्धांतों को अपने जीवन में आत्मसात करने की प्रेरणा दी। गोष्ठी के पश्चात् श्रोताओं द्वारा खुला प्रश्न मंच का आयोजन किया गया, जिसमें वक्ताओं ने अनेक साधर्मियों की अनेक शंकाओं का निराकरण किया।

गोष्ठी का संचालन पण्डित तपिशजी शास्त्री ने किया। **- कमल गदिया, उदयपुर**

३. देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट द्वारा दिनांक 1 मई से 5 मई तक आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की 122वीं जन्म जयन्ती अत्यंत हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई।

इस अवसर पर प्रात: तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा ग्रन्थाधिराज समयसार के पुण्य-पाप अधिकार पर मार्मिक व्याख्यानों का लाभ मिला। दोपहर में पण्डित विरागजी

शास्त्री द्वारा समयसार के 211वें कलश व 412वीं गाथा पर प्रवचन हुये एवं रात्रि में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री द्वारा 'दृष्टि का निधान' के आधार पर प्रवचन हुये। इसके पश्चात् रात्रि में सिद्धायतन-द्रोणगिरि के बालकों द्वारा अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

कार्यक्रम में 170 तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया। साथ ही प्रतिदिन गुरुदेवश्री के समयसार गाथा 49 पर सी.डी. प्रवचनों का भी लाभ मिला।

कार्यक्रम के अन्तिम दिन दिनांक 5 मई को गुरुदेवश्री की जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में प्रात: प्रभात फेरी निकाली गई तथा गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया, जिसमें ब्र.हेमचंदजी हेम, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा, पण्डित विरागजी शास्त्री, ब्र.रमाबेन, ब्र.बासंती बेन ने अपने प्रासंगिक उद्‌गार व्यक्त किये। इस अवसर पर श्री मुकुन्दभाई मेहता, श्री कान्तिभाई मोटाणी, श्री सुमनभाई दोशी, श्री प्रवीणभाई वोरा इत्यादि महानुभाव विशेष रूप से उपस्थित थे।

इस अवसर पर पण्डित विरागजी शास्त्री द्वारा तैयार नवीन वीडियो एनीमेशन सी.डी. ''भगवन बनने जन्मे हम'' का लोकार्पण डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा किया गया।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं श्री दीपक जैन 'धवल' भोपाल द्वारा संपन्न कराये गये। **– उल्लासभाई जोबालिया**

वेदी प्रतिष्ठा सानन्द संपन्न

मेरठ (उ.प्र.) : यहाँ मौ. तीरगरान जैन समाज के आयोजकत्व में श्री महावीर जयन्ती भवन में दिनांक 9 से 13 मई तक वेदी प्रतिष्ठा व त्रिकलशारोहण कार्यक्रम आचार्य भारतभूषण एवं एलाचार्य क्षमाभूषण व क्षुल्लक संयमभूषणजी महाराज के सानिध्य में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर महाराजश्री के प्रवचनों के अतिरिक्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा **'जैनदर्शन अकर्तावाद है'** व **'हम आत्म ध्यान कैसे करें'** विषयों पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। इनके अतिरिक्त पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा एवं पण्डित प्रकाशचंदजी सकारिया ज्योतिर्विद मैनपुरी के प्रवचनों का भी लाभ मिला।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना एवं सहयोगी के रूप में पण्डित अनिलजी 'धवल' भोपाल, पण्डित निखिलजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अकलंकदेव जैन मंगलार्थी, पण्डित शाकुलजी शास्त्री मेरठ एवं पण्डित ऋषभकुमारजी शास्त्री दिल्ली ने संपन्न कराये। सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर के कुशल निर्देशन में संपन्न हुये।

स्वाध्याय शिविर संपन्न

सुरेन्द्रनगर (गुज.) : यहाँ दिनाँक 21 से 25 अप्रैल 2011 तक स्वाध्याय शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर से पधारे पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा तीनों समय प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला। प्रात: निश्चय-व्यवहार विषय पर एवं दोपहर व सायंकाल करणानुयोग की विशेष कक्षा एवं प्रवचन का लाभ मिला। ज्ञातव्य है कि **लींबड़ी** नामक ग्राम में भी आपके एक प्रवचन का लाभ मिला। **– निलेशभाई, सुरेन्द्रनगर**

शोक समाचार

1. इन्दौर (म.प्र.) निवासी डॉ. राजेशजी जैन का दिनांक 12 मई को 74 वर्ष की उम्र में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप इन्दौर के वरिष्ठ चिकित्सक थे। आपके निधन से इन्दौर जैन समाज को अपूरणीय क्षति हुई।

ज्ञातव्य है कि आप श्री मुकेशजी जैन (ढाईद्वीप जिनायतन) इन्दौर के पिताजी थे। आप टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित गतिविधियों के परम सहयोगी थे।

2. मुम्बई निवासी श्रीमती इन्दिराबेन दोशी का दिनांक 12 मई को 82 वर्ष की उम्र में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के संरक्षक थे।

3. उज्जैन निवासी श्रीमती इन्दिरादेवी झांझरी का दिनांक 12 मई को 68 वर्ष की उम्र में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थीं। ज्ञातव्य है कि आप पं.विमलदादा झांझरी की धर्मपत्नी थीं।

4. जयपुर निवासी श्री स्वरूपचंदजी जैन का दिनांक 11 मई को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थे। टोडरमल स्मारक भवन में चलने वाले स्वाध्याय के आप दैनिक श्रोता थे।

5. जयपुर निवासी श्री ज्ञानचंदजी खिन्दूका का दिनांक 7 मई को शांतपरिणामों पूर्वक देहावसान हो गया। आप तीर्थक्षेत्रों, शास्त्रों व संस्कृति के विकास हेतु सदैव तत्पर रहे। आप अनेक धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक संस्थाओं से सक्रियता से जुड़े रहे। आपके चिर वियोग से जयपुर जैन समाज को एक अपूरणीय क्षति हुई है। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 2100-2100/- रुपये प्राप्त हुये।

6. भगवाँ निवासी श्री मोतीलालजी जैन का दिनांक 21 अप्रैल को 78 वर्ष की उम्र में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप गहरे तत्त्वाभ्यासी और तत्त्वरसिक थे। आप तीर्थधाम सिद्धायतन के उपाध्यक्ष थे। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक अनुराग जैन के दादाजी थे।

7. बड़ौत (उ.प्र.) निवासी श्रीमती सुमित्रादेवी जैन ध.प. श्री रोशनलालजी जैन का दिनांक 18 मई को देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के ध्रुवफण्ड हेतु 5000/- रुपये प्राप्त हुये हैं।

8. जयपुर (राज.) निवासी श्रीमती पुष्पा जैन (पहाड़िया) (निजी सचिव, शासन सचिवालय, जयपुर) धर्मपत्नी श्री सुशील कुमारजी जैन (सहायक शासन सचिव, शासन सचिवालय, जयपुर) का आकस्मिक निधन हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थीं। टोडरमल स्मारक में लगनेवाले प्रत्येक शिविर में नियमित आती थीं। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 501-501/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही भावना है।

चतुर्थ बाल युवा धार्मिक शिविर संपन्न

एवरशाइननगर-मलाड (मुम्बई) : यहाँ श्री महावीर दि.जैन चैत्यालय ट्रस्ट द्वारा दिनाँक १९ से २४ अप्रैल तक चतुर्थ बाल युवा धार्मिक शिक्षण शिविर सानन्द संपन्न हुआ।

इस शिविर में मुख्य विद्वान के रूप में जयपुर से पधारे पण्डित शांतिकुमारजी पाटील द्वारा प्रतिदिन दोनों समय 'पंचभाव' विषय पर मार्मिक कक्षाएं प्रौढ शिविरार्थियों के लिए ली गयी। युवावर्ग के लिए 'आठ कर्म' विषय पर पण्डित सौरभ शास्त्री मुम्बई व 'छह सामान्य गुण' पर विदुषी अनुप्रेक्षा शास्त्री मुम्बई ने कक्षा ली। बालवर्ग एवं संस्कार संबंधी कक्षाएं पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री गोरेगांव व पण्डित राहुलजी शास्त्री अलवर द्वारा ली गयी। रात्रिकालीन प्रवचनों में पण्डित अश्विनभाई शहा मलाड, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई व पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री राजकोट का लाभ प्राप्त हुआ।

शिविर के समापन के अवसर पर रविवार को निकाली गयी शाकाहार रैली विशेष आकर्षण का केन्द्र रही। प्रतिदिन प्रात: जिनेन्द्र पूजन एवं सायं भक्ति का तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। अन्तिम दिन परीक्षा लेकर सफल छात्रों को पुरस्कृत किया गया।

संपूर्ण कार्यक्रम पण्डित विपिनकुमारजी शास्त्री आगरावालों के निर्देशन में श्रीमती पूजा भारिल्ल, श्रीमती सीताजी, कु.वन्दना जैन आदि साधर्मियों के सहयोग से संपन्न हुआ।

संकल्प दिवस के रूप में...

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के 77वें जन्मदिवस के अवसर पर स्नातक परिषद् के सदस्यों द्वारा आयोजित अभिनन्दन सभा में परिषद् के अध्यक्ष पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि स्नातक परिषद् को यह दिन संकल्प दिवस के रूप में मनाना चाहिये। जो भी स्नातक इस अभियान में नये आवें, वे इस दिन तत्त्वप्रचार का संकल्प करें।

ज्ञातव्य है कि डॉ. भारिल्ल के 75वें जन्मदिवस के अवसर पर कोलारस में आयोजित डॉ. भारिल्ल के हीरक जयन्ती समारोह के अवसर पर उनके स्नातक शिष्यों ने उन्हीं के जैसा आजीवन तत्त्वप्रचार करने का संकल्प लिया था। इस संकल्प को उनके स्नातकों ने पुन: दोहराया और लगभग 78 नये स्नातकों ने भी इस संकल्प में बद्ध होकर तत्त्वज्ञान के आजीवन प्रचार-प्रसार की शपथ ली।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -

वेबसाईट - www.vitragvani.com

संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com